दीवारें नहीं बोलतीं

सुहास कुमार

हम आप सब जानते हैं कि कोई भी बात यदि बार-बार कही जाए तो उसका असर पड़ता है। उसी बात को बड़े-बूढ़े कहते हैं तो ज़्यादा असर होता है। यदि उससे धर्म जोड़ दिया जाए तो उसे मानने को हम मजबूर होते हैं।

बचपन से ही हमें बड़े होकर समाज में क्या भूमिका निभानी है, उसके लिए तैयार कराया जाता है। घर-बाहर, नाते-रिश्तेदार, अड़ोसी-पड़ोसी, टी.वी. और फिल्मों में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हमें तैयार किया जाता है।

गलत धारणा

लड़कियों को ज़्यादा पढ़-लिख कर क्या करना है? उन्हें घर के कामकाज में निपुण होना चाहिए। नौकरी करना और कमाकर लाना पुरूषों का काम है। औरत का काम पति के कामों में हाथ बंटाना है। परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी औरत की है। कम पैसे में सबको खाना खिलाने की ज़िम्मेदारी भी उसी की है। ज़िम्मेदारियों का तो ओर-छोर नहीं है। क्या वह ऐसी ज़िंदगी ही जीती रहेगी? क्या वह दूसरों के बताए रास्ते पर ही चलती रहेगी? क्या वह घर की चार दीवारी में सुरक्षित है?

अगर दीवारें बोल सकतीं तो बतातीं कि घर में भी औरतों को क्या नहीं सहना पड़ता है। लड़की या पत्नी होने के नाते, उनका अपना कोई समय नहीं। घर, संपत्ति उनकी अपनी नहीं। अपनी कमाई पर भी उनका अधिकार न के बराबर होता है। उनका शोषण, दमन और अवहेलना होती है। यौन हिंसा की भी जब-तब वे शिकार होती रहती हैं।

अपनी बात कहें

दीवारें नहीं बोलेंगी। हमें ही अपनी बात कहनी होगी। हमारी बात हमसे अच्छी तरह कौन कह सकता है। हमारी पीड़ा और हमारे दर्द को हमसे अच्छा कौन समझ सकता है। "जाके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई।"

लड़कियों के अधिकार

1. लड़कियों को जन्म लेने का उतना ही अधिकार है जितना लड़कों को।
2. लड़कियों को समान अवसर और सुविधा मिलनी चाहिए।
3. लड़की के स्वास्थ्य और भोजन पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए।
4. लड़की को शिक्षा के लिए पूरा प्रोत्साहन और सुविधा मिलनी चाहिए।
5. लड़की को खेलकूद और मनोरंजन के लिए समय मिलना चाहिए।
6. घर के काम में बेटा-बेटी की बराबर की भागीदारी होनी चाहिए।
7. खेलने-कूदने, घूमने-फिरने पर पाबंदियां नहीं लगानी चाहिएं।
8. लड़की को पूरा सम्मान मिलना चाहिए।
9. उसके शारीरिक और मानसिक विकास को पूरा अवसर मिलना चाहिए।
10. उसे उसका बचपन मिलना चाहिए यानि उसे घर और बाहर के कामों में ऐसे नहीं लगाना चाहिए कि वह काम के बोझ से दब जाए और हंसना ही भूल जाए।

हमें अपनी बात ज़्यादा असरदार ढंग से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए अन्य माध्यमों का सहारा लेना होगा। इसी बात को ध्यान में रख कर 'सबला' के इस अंक में हमने संचार माध्यमों के बारे में विस्तार से बताने की कोशिश की है। आशा है हमारी बात आप तक पहुंचेगी और आपके दिलों को छुएगी। □

11. उसकी बात को गंभीरता से सुनना चाहिए और मानना चाहिए।
12. बेटी जब तक पढ़ना चाहे उसे अवसर मिलना चाहिए।
13. शादी के लिए ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं करनी चाहिए।
14. उस पर रीति-रिवाज नहीं थोपे जाने चाहिएं।
15. उसे अपने मनपसंद विषय और काम चुनने, सीखने और करने की पूरी आज़ादी होनी चाहिए।
16. लड़कियों की सुरक्षा के लिए उन्हें यौन संबंधी शिक्षा देना आवश्यक है।
17. उनकी आयु के साथ-साथ होने वाले शारीरिक बदलावों की सही जानकारी समय पर दी जानी चाहिए।
18. किसी भी ऐसे काम में उन्हें नहीं लगाना चाहिए जिसमें उन्हें अपने लिंग के कारण विशेष ख़तरा हो।
19. उनको स्वतंत्र जीवन जीने के अधिकार का विकल्प भी मिलना चाहिए।
20. उन्हें इज़्ज़त से जीने का अधिकार मिलना चाहिए। □

साभार—अनसूया